# <u>विदाई सम्बोधन</u>

बंधुवर न्यायमूर्ती धीरज सिंह ठाकुर,

मेरे अन्य साथी न्यायमूर्तीगण,

देवियों और सज्जनों।

कल्पनाओं को लिखना और बयान करना सरल हो सकता है परन्तु भावनाओं को व्यक्त करना अथवा लिखना बहुत कठिन है आज कुछ ऐसी ही स्थिति मेरी है। मैं भावुक हूँ और अपनी भावुक्ता व्यक्त करने में असमर्थ।

आज हमारे चमन का एक महकता गुलाब हमसे विदा ले दूसरे गुलशन को गुलज़ार करने जा रहा है। मेरा इशारा बंधुवर ठाकुर की और है। यह हमसे विदा ले कर बॉम्बे उच्च न्यायालय को शुशोभित करने जा रहे हैं। यह जम्मू और कश्मीर और लद्दाख उच्च न्यायालय के न्याय दूत के रूप में वहां जा रहे हैं और सम्भवता वह अपनी विधुता, निष्ठा, कार्य शैली व सरल व्यवहार से वहां के लोगों का मन जीत कर जम्मू और कश्मीर का पर्चम फेहराने में सफल होंगे। मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आगामी एक वर्ष में वह किसी न किसी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायमूर्ती के रूप में भी आसीन होंगे।

आज उनकी विदाई वेला पर मुझे अयोध्या सिंह उपाध्याय “हरिऔध” की एक छोटी सी कविता "एक बूंद" याद आती है

*<u>एक बूंद</u>*

*ज्यों निकल कर बादलों की गोद से*
*थी अभी एक बूंद कुछ आगे बढ़ी*
*सोचने फिर फिर यही मन में लगी*
*आह क्यों घर छोड़ कर मैं यों बढ़ी।*

*दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा*
*मैं बचूंगी या मिलूंगी धूल में*
*या जलूंगी गिर अंगारे पर किसी*
*चू पड़ूंगी या कमल के फूल में।*

*बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा*
*वह समुंदर ओर आई अनमनी*
*एक सुंदर सीप का मुंह था खुला*
*वह उसी में जा पड़ी मोती बनी।*

*लोग यों ही हैं झिझकते सोचते*
*जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर*
*किंतु घर का छोड़ना अक्सर उन्हें*
*बूंद लौं कुछ ओर ही देता है कर।*

अतः उनका यहाँ से मुंबई जाना एक सुखद संकेत है

न्यायमूर्ती ठाकुर केवल एक न्यायमूर्ती नहीं हैं वह एक अच्छे इंसान, सरल और सौम्य व्यक्तित्व के धनी हैं। वह सौम्यता की मूर्ती हैं। मैंने पाया है की उन्होंने अपनी इस सरलता व सौम्यता से बड़े -बड़े प्रशासनिक मसले सहजता से सुलझाए हैं मैं उनकी कितनी भी तारीफ़ करूँ वह कम है। उन्होंने न्यायमूर्ती पद की गरिमा अनुरूप कार्य कर अपने परिवार के संस्कार व संस्कृति को और अधिक उजागर किया है।

उनकी इस विदाई की वेला पर सुबह से मेरे मन में एक फ़िल्मी गीत बार-बार गूँज रहा है *"हम तो चले परदेश हम परदेसी हो गए छूटा अपना देश हम परदेसी हो गए"*

परन्तु उनके यहाँ से जाने का तात्पर्य यह नहीं की वह हमारे लिए परदेसी हो जायेंगे। उनकी जड़ें मजबूत हैं और वह जम्मू और कश्मीर में ही रहेंगी। वह हमसब के दिलों में बसते हैं अतः भौगोलिक दूरियां कोई मायने नहीं रखती वह हमारे साथ हैं, हमारे साथ रहेंगे।

बचपन में मैंने अपनी बहनों को गुड्डे गुड़ियों से खेलते देखा है कालान्तर में इन गुड्डे गुड़ियों ने बार्बी डॉल का रूप लिया। बंधुवर ठाकुर व उनकी धर्म पत्नी की एक तस्वीर देख कर मुझे लगता है की हमारे गुड्डे गुड़ियाँ तो यही हैं इस अवसर पर उनकी यह तस्वीर उनको उपहार स्वरुप देता हूँ। सम्भवतः पसंद आएगी।

इसी के साथ उन्हें इस न्यायलय के हर एक व्यक्ति की और से अपना शुभ आशीष व शुभ कामनायेँ देता हूँ।

कल्याणमस्तु।